22 Saturday February

FEBRUARY-2003

प्रथ्वीराज रासो – चन्दबरदायी

प्रमाणिकता / अप्रमाणिकता

प्रारंभ में रासो को एक प्रमाणिक ग्रंथ समझा गया। कर्नल टाड ने इसे प्रमाणिक समझ कर इसके साहित्यिक सौन्दर्य पर मुग्ध होकर इसके लगभग 30,000 पद्यों को अनुवाद के लिए भेज दिया। फ्रेंच विद्वान गार्सा द तासी भी इसे प्रमाणिक मानते थे। लेकिन इसी बीच 1875 ई. में डॉ० बूलर को कश्मीर में जयानक द्वारा लिखा गया प्रथ्वीराज विजय नामक संस्कृत काव्य मिला,

इतिहास की दृष्टि से इस ग्रंथ में वर्णित घटनायें प्रथ्वीराज रासो से अधिक शुद्ध प्रतीत हुई। ऐसी स्थिति में डॉ० बूलर को प्रथ्वीराज रासो की प्रमाणिकता पर संदेह हुआ और उसका प्रकाशन कार्य रोक दिया गया।

डा० बूलर के इस संदेहपूर्ण दृष्टिकोण से भारतीय विद्वान भी सोचने पर मजबूर हो गये कि इसे प्रमाणिक माना जाय या नहीं। इस दिशा में प्रमुख विद्वान थे डा० दशरथ ओझा और हीराचंद ओझा जिन्होंने इस विचार को निर्मूल और रासो को प्रमाणिक सिद्ध करने का प्रयत्न भी किया। लेकिन यह विवाद आज तक बना हुआ है। कुछ आलोचक रासो को पूरा ऐतिहासिक मानते है, तो कुछ इसे अर्द्धप्रमाणिक मानते है तो कुछ इसे पूर्ण अप्रमाणिक मानते है,

पहला वर्ग मानता है कि रासो अप्रमाणिक है। यह वर्ग चन्दबरदायी को प्रथ्वीराज का समकालीन भी नहीं मानता। ये है रामचन्द्र शुक्ल, रामकुमार वर्मा हीराचंद ओझा,

दूसरा वर्ग – यह वर्ग रासो के वर्तमान रूप को प्रमाणिक तथा चंद को पृथ्वीराज का समकालीन मानता है। ये हैं – श्यामसुंदर दास, मोतीलाल

तीसरा वर्ग – यह वर्ग मानता है कि पृथ्वीराज के दरबार में चन्द नामक कवि था, जिसने रासो लिखा था लेकिन वह मूल रूप आज नहीं मिलता। केवल परिवर्तित या बिखरा रूप ही मिलता है – डा॰ दशरथ ओझा –

चौथा वर्ग – यह इन दोनों को समकालीन मानता था लेकिन प्रबंध रूप में रासो की रचना नहीं की। नरोत्तम स्वामी – इसके समर्थक हैं।

रासो की अप्रमाणिकता के कारण – इसके कारण हैं – ① घटना, ② काल ③ भाषा संबंधी अव्यवस्था –

① रासो में परमार, चौहान क्षत्रिय अग्निवंशी माने गये हैं जबकि प्राचीन ग्रंथों के आधार पर ये सूर्यवंशी प्रमाणित होते हैं।

② चौहानों की वंशावली पृथ्वीराज की माता का नाम, माता का वंश, पुत्र का नाम आदि इतिहास और पृथ्वीराज विजय नामक ग्रंथ से मेल नहीं खाता।

③ पृथ्वीराज की मां का नाम कर्पूरदेवी था, न कि कमला जैसा रासो में वर्णित है।

④ गुजरात के राजा भीमसिंह का पृथ्वीराज द्वारा वध भी अनैतिहासिक है क्योंकि के पृथ्वीराज

के बाद 50 वर्ष तक जीवित रहे।

Tuesday 25 February

⑤ शहाबुद्दीन की मृत्यु संबंधी घटना भी कल्पना पर आधारित थी क्योंकि इसकी मृत्यु पृथ्वीराज द्वारा नहीं गाक्खरों के हाथों हुई।

⑥ रासो में पृथ्वीराज के 11 वर्ष से लेकर 36 वर्ष तक की आयु तक उसके 14 विवाहों का वर्णन है जबकि इतिहास के अनुसार पृथ्वीराज की मृत्यु 30 वर्ष की अवस्था में ही हो गयी थी। अतः इतनी शादी असंभव है।

काल —

① रासो में पृथ्वीराज की मृत्यु 1158 संवत है जबकि इतिहास में वह संवत 1148 है। पृथ्वीराज का जन्म रासो में 1115 संवत है इतिहास के अनुसार वह 1120 ठहरता है।

② रासो के अनुसार शहाबुद्दीन पृथ्वीराज द्वारा 1249 में मारा गया लेकिन इतिहास के अनुसार 1263 में गाक्खरों द्वारा उसका वध हुआ।

इस विवेचन के आधार पर रासो एक जाली ग्रंथ है यदि चन्द पृथ्वीराज का समकालीन होता और रासो उसकी रचना होती तो शायद इतनी कमियां इसमें न होती। आ० शुक्ल इस विषय में लिखते हैं — इस संबंध में यही कहा जा सकता है कि यह ग्रंथ पूरा जाली है शायद चन्द के कुछ पद्य इधर-उधर बिखरे हों पड़े हों लेकिन यह पता लगाना असम्भव लगता है!

भाषा — रासो में अरबी फारसी के बहुत से शब्दों का प्रयोग हुआ है जो चंद के समय में किसी भी प्रकार प्रयोग में नहीं लाये जा सकते। इस आधार पर रासो की भाषा चन्द के समय की भाषा न होकर 16वीं

शब्दों को दुहराता है।

आ॰ शुक्ल मानते हैं: यह ग्रंथ (पृथ्वीराज रासो) न तो भाषा के इतिहास और न ही साहित्य के जिज्ञासुओं के काम का है।"

प्रशंसकों

प्रमाणिक मानने वाले मत —

रासो एक जाली ग्रंथ नहीं है इसमें समय के साथ काफी बदलाव के कारण इसका रूप बिगड़ गया है पर इस विशाल ग्रंथ में कुछ सार भी अवश्य है। इसका मूल रूप निश्चित रूप से साहित्य और भाषा के अध्ययन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। डा॰ हजारीप्रसाद का मत है" इन पद्यों के प्रकाशन के बाद अब इस विषय में किसी को संदेह नहीं रह गया है कि चन्द नामक कवि पृथ्वीराज के दरबार में अवश्य थे, और उन्होंने ग्रंथ भी लिखा है।

डॉ दशरथ शर्मा ने इन आरोपों का खंडन करते हुए लिखा।

① मूल रासो न तो जालीग्रंथ है और न उसकी रचना सं 1600 के आसपास हुई है। कुछ समय पहले मिली लघुतम प्रतियों के आधार पर घटना भाषा और काल संबंधी अव्यवस्थाओं का निराकरण हो जाता है

② ओझा जी के अनुसार रासो की अशुद्ध वंशावली का यह विस्तार बीकानेर से प्राप्त प्रति में नहीं है। इस प्रति और पृथ्वीराज विजय में कुछ नामों का अंतर

③ अनंगपाल और पृथ्वीराज के संबंध की अशुद्धि इस प्रति में है।

④ पृथा का विस्तार, शहाबुद्दीन - समरसिंह युद्ध की घटना का कहीं उल्लेख नहीं। इसमें पृथ्वीराज - संयोगिता के स्वयंवर का वर्णन भी नहीं।

सार यह है कि अपने मूल रूप में रासो में ऐतिहासिकता मिलती है लेकिन बीकानेर की प्रति से भी रासो की पुरानी प्रति को ढूंढ कर निकाला जाये। यदि वह प्राचीन प्रति मिल जाये तो निश्चित रूप से उसमें लिखी बातें मिलेंगी क्योंकि यह संस्कृत में रासो का सारांश है।

काल वैषम्य का समाधान श्री पं. मोहन लाल द्वारा किया गया - अनन्त अर्थात्
अ = शून्य (०) इससे ९० वर्ष का अंतर
नन्द - नौ (९)
सभी तिथियों के ठीक बैठता है।
श्री ओझा का मानना है कि राजस्थान में विक्रमी संवत् का प्रचलन अधिक रहा है।
पृथ्वीराज का दरबारी कवि जयानक कश्मीरी था। चन्द संस्कृत का कवि था। शायद ईर्ष्यावश या भाषा में अंतर के आधार पर इन दोनों में इतना ~~अन्तर~~ भेद रहा है।

डॉ० हजारी प्रसाद ने रासो को अर्द्धप्रमाणिक रचना स्वीकार किया है। इनका कहना है कि इस रासो का काव्य रूप १०वीं शताब्दी के साहित्य के काव्यरूप से समानता रखता है। इसमें सभी प्राचीन काव्य-रूढ़ियों का सुन्दर वर्णन हुआ है। भाषा संबंधी अव्यवस्था का कारण यही हो सकता है कि उस समय मुसलमानों के आक्रमण शुरू हो गये थे। उन पर उर्दू का प्रभाव आरम्भ होने के कारण अरबी-फारसी के शब्द भी रासो में प्रयोग होने लगे।

उसका मूल रूप अभी प्राप्त नहीं होता समय के साथ अपने चरित नायक के गौरव की रक्षा के लिए परिवर्तन करते रहते हैं। रासो के विषय में इतना कहा-सुना-लिखा गया कि एक साधारण

Scanned with CamScanner

FEBRUARY-2003

M		3	10	17	24
T		4	11	18	25
W		5	12	19	26
T		6	13	20	27
F		7	14	21	28
S	1	8	15	22	
S	2	9	16	23	

WEEK-09 059-306

Important

पाठक हैरान रह जाता है कि वह कैसे असल में कहाँ था जाता? इस विचार मंथन के बाद ग्रंथ के साहित्यिक रस तक पहुंचना एक आम पाठक के लिए अत्यन्त कठिन कार्य है

8 a.m.

9 a.m.

सम्पर्क भाषा